डॉ. नीरजा माधव की कहानियों में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन के विविध पक्ष

श्री. अनिल प्रभाकर कांबळे [१] , डॉ. सुरैय्या इसुफअल्ली शेख [२]
[१]शोध-छात्र , ग्राम-शिरभावी रोड, खर्डी, तहसील-पंढरपुर, जि.सोलापुर.
[२]शोध-निर्देशक , असोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्षा, हिंदी विभाग,मा.ह. महाडीक कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,मोडनिंब, तहसील-माढा, जि.सोलापुर.

प्रस्तावना:

मध्यवर्गीय जीवन को चित्रित करते समय डॉ. नीरजा माधव की दृष्टि सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक और साहित्यिक इन पक्षों पर केंद्रित हुई है। जैसे-जैसे भारत में पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का विकास होता गया वैसे-वैसे मध्यवर्ग के आचार-विचार, रहन-सहन और व्यवहार में काफ़ी परिवर्तन आ गया है। नीरजा जी ने मध्यवर्ग का चित्रण निम्न पक्षों के आधार पर किया है-

- **मध्यवर्गीय जीवन का सामाजिक पक्ष :**

डॉ. नीरजा माधव की कहानियों में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन के सामाजिक पक्ष के अनुशीलन के पश्चात् निष्कर्ष के रूप में जो तथ्य सामने आए हैं, वे इस प्रकार हैं-

(1) मध्यवर्गीय समाज में विवाह का महत्त्व असाधारण होता है।
(2) मध्यवर्गीय समाज में दहेज-प्रथा बड़ी तेज़ी से फल-फूल रही है।
(3) मध्यवर्ग में लड़की को देखने के लिए परिवार के सारे लोग जाते हैं।
(4) मध्यवर्ग में बच्चों की पसंद-नापसंद को नजरअंदाज कर दिया जाता है।
(5) मध्यवर्ग में छोटी उम्र में ही बच्चों का विवाह कर दिया जाता है।
(6) मध्यवर्गीय युवक-युवतियां देर से विवाह करना पसंद करते हैं।
(7) मध्यवर्गीय युवक-युवतियों में प्रेम विवाह की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है।
(8) मध्यवर्गीय युवक-युवतियां अंतर्जातीय विवाह करने लगे हैं।
(9) मध्यवर्ग में पुनर्विवाह का विरोध और पुनर्विवाह की प्रवृत्ति भी दिखाई देती है।
(10) मध्यवर्गीय समाज में परिवार को अनन्य साधारण महत्त्व है।

- **मध्यवर्गीय जीवन का आर्थिक पक्ष :**

डॉ. नीरजा माधव की कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन के आर्थिक पक्ष के अनुशीलन से जो तथ्य सामने आए, वे इस प्रकार हैं-

(1) डॉ. नीरजा माधव की कहानियों में मध्यवर्ग की आय का स्त्रोत प्राय: नौरकी है। परंतु कुछ कहानियों में व्यवसाय, पेंशन, राजनीति, लेखन, पत्रकारिता, नृत्य एवं कलाएं, रोजगार, खेती, गलत धंदे यह आय के स्त्रोत दिखाई देते हैं।
(2) मध्यवर्ग की आर्थिक स्थिति बड़ी चिंताजनक होती है।
(3) कई कहानियों में मध्यवर्गीय परिवार की आर्थिक तंगी का चित्रण दिखाई देता है।
(4) मध्यवर्ग आर्थिक विषमता से पीड़ित होने के कारण अर्थ का लोभी बन गया है।
(5) बढ़ती हुई महंगाई ने मध्यवर्ग की कमर ही तोड़ दी है।
(6) मध्यवर्गीय समाज में बेरोजगारी, अमीरी-गरीबी का भेद दिखाई देता है।
(7) मध्यवर्गीय लोगों में अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए दिखावे की प्रवृत्ति दिखाई देती है।
(8) घरेलू कामकाज के लिए नौकर रखना मध्यवर्गीय परिवार की अच्छी आर्थिक स्थिति का परिचायक है।
(9) सभी सुविधाओं से युक्त मकान होना मध्यवर्ग की अच्छी आर्थिक स्थिति का प्रमाण है। जहां किराए का या स्वयं का मकान हो, किंतु सुविधाओं से रहित हो, वहां मध्यवर्ग की आर्थिक स्थिति अभावग्रस्त परिलाक्षित होती है।
(10) मध्यवर्ग अर्थ के अभाव में अपनी इच्छाओं को आकांक्षाओं को और सपनों को दबाता हुआ नज़र आता है।

- **मध्यवर्गीय जीवन का राजनैतिक पक्ष :**

डॉ. नीरजा माधव की कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन के राजनैतिक पक्ष के अनुशीलन के पश्चात जो तथ्य सामने आए, वे इस प्रकार हैं-

(1) मध्यवर्गीय समाज में राजनैतिक चेतना का विकास होता हुआ नज़र आता है।
(2) शासन के प्रति स्वार्थी नेताओं के प्रति मध्यवर्गीय समाज में असंतोष फैला है।
(3) वर्तमान कानुनव्यवस्था नाकामयाब नज़र आती है, इसके प्रति भी मध्यवर्ग के मन में विश्वास नहीं रहा हैं।

(4) भारत का लोकतंत्र पूरी तरह से भ्रष्ट हो चूका है इस लोकतंत्र के प्रति मध्यवर्गीय लोगों में असंतोष है।
(5) मध्यवर्गीय समाज अन्याय के विरुद्ध आंदोलन करने की इच्छा रखता है।
(6) ऐंश-आरामी राजनेता के कारण मध्यवर्ग घुटन भरी जिंदगी जीने को विवश है।
(7) भावी काल में भारत में क्रांति हुई तो उसका सूत्रधार मध्यवर्ग ही होगा, वही भारत में क्रांति लाएगा।

- **मध्यवर्गीय जीवन का धार्मिक पक्ष :**

डॉ. नीरजा माधव की कहानियों में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन के धार्मिक पक्ष के अनुशीलन के पश्चात् निष्कर्ष रूप में जो तथ्य सामने आए, वे इस प्रकार है-

(1) डॉ. नीरजा माधव की कहानियों में ईश्वर के प्रति आस्था-अनास्था दोनों का चित्रण मिलता है।
(2) मध्यवर्गीय परिवार में पूजा-पाठ, व्रत-उपवास, तीर्थयात्रा आदि के प्रति आस्था दृष्टिगोचर होती है।
(3) मध्यवर्गीय परिवार अंधविश्वास का निवास स्थल होता है।
(4) मध्यवर्गीय समाज में धर्म-नियम दिखाई देते हैं। लेकिन पढ़ा-लिखा तबका धर्म को हिंस्र पशु समझने लगा है।
(5) डॉ. नीरजा माधव की कहानियों में मध्यवर्गीय समाज अपने धर्म के प्रति आस्था रखते हैं लेकिन कुछ लोगों में धर्म के प्रति अनास्था भाव भी दिखाई देता हैं।
(6) मध्यवर्ग में अपने-अपने धर्म का प्रचार-प्रसार करने की भावना परिलक्षित होती है।
(7) अपनी प्रगति के मार्ग में जो धर्म-नियम बाधक सिद्ध होते हैं उन्हें इस वर्ग की शिक्षित युवा पीढ़ी उखाड़कर फेंकने लगी है। लेकिन उन्हें नींव तक उखाड़कर फेंकना वक्त की अपेक्षा रखता है।

- **मध्यवर्गीय जीवन का मनोवैज्ञानिक पक्ष :**

डॉ. नीरजा माधव की कहानियों में मध्यवर्ग के मनोवैज्ञानिक पक्ष के अनुशीलन से जो तथ्य प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं-

(1) सेक्स (काम) मध्यवर्गीय लोगों के काफी असर डालता है।
(2) मध्यवर्ग में नैतिकता के बंधन प्रबलतम हैं और यह वर्ग सेक्स में एकनिष्ठता कस हामी है।
(3) सेक्स की अतृप्ति से मध्यवर्ग में अनेक समस्याएं खड़ी होती हैं, अतः इस वर्ग में सेक्स एक समस्या बन जाता है।
(4) इस वर्ग के पति-पत्नी सेक्स की दृष्टि से एकनिष्ठ नहीं रहते तो उनका दाम्पत्य जीवन विषाक्त बनता है।
(5) मध्यवर्गीय लोगों में अहम् यह प्रवृत्ति होती है जो कभी उन्हें ऊपर उठाती है तो कभी नीचे गिराती है।
(6) मध्यवर्गीय समाज में भय, संदेह, ईर्ष्या, अपराधबोध की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।
(7) मध्यवर्गीय समाज में प्रतिशोध की असाधारण आकांक्षा दिखाई देती है।
(8) मध्यवर्गीय आत्मग्लानि एवं जिज्ञासा के भाव परिलक्षित होते हैं।
(9) मध्यवर्गीय व्यक्ति में स्वाभिमान कूट-कूटकर भरा हुआ दिखाई देता है।
(10) निर्धनता, कुरूपता और असफलता के कारण मध्यवर्गीय लोगों में हीनता की ग्रंथी पाई जाती है।

- **मध्यवर्गीय जीवन का सांस्कृतिक पक्ष :**

डॉ. नीरजा माधव की कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन के सांस्कृतिक पक्ष के अनुशीलन से जो तथ्य सामने आए, वे इस प्रकार है-

(1) मध्यवर्गीय समाज में विभिन्न प्रकार के संस्कार दिखाई देते हैं।
(2) मध्यवर्ग में विवाह संबंधी अनेक रीतियां प्रचलित मिलती हैं।
(3) डॉ. नीरजा माधव की कहानियों में हमें विवाह विषयक नई-नई धारणाएं दिखाई देती है।
(4) मध्यवर्गीय समाज में वेशभूषा और खान-पान आदि को विशिष्ट महत्व दिया जाता है।